मनोः भिरामम् &c. (scil. महेन्द्रम्); or Meghad.: श्राष्ट्रानीप-गतयमुनासंगमेवाभिरामा; or Chaurapanch.: कान्ताप्रगीतप-रिहासविचित्रनृत्वे क्रीडाभिराम इति यातु मदीयकाजः; or comp. the quotation s. vv. श्रापशुच, श्राभिनम्न.

2. m. (-म:) A name of Siva (in the Padmapurána: अभिरामाय तत्त्वाय व्यालकत्यायते नमः).

II. Avyayibh. (-सम्) Concerning Ráma; comp. the following. E. ग्रीम and राम.

भिरामकाच्य Tatpur. n. (-च्यम) The name of a poem referring to the history of Ráma, by Ramánátha or Laramánátha. E. अभिराम (II.) and काच्य.

चिमराष्ट्र Bahuvr. m. f. n. (-ष्ट्र:-ष्ट्रा-ष्ट्रम्) (ved.) Having obtained power or dominion; e.g. Kigv.: असपतः सपत्नहा चिमराष्ट्रो विषासिहः (Sáyańa: अभिराष्ट्रो ऽभिगतराष्ट्रः प्रा-प्रराज्यः). E. स्रिभ and राष्ट्र.

स्रभिष्टि Tatpur. f. (-चि:) ¹ Desire, relish or taste for, pleasure, delight; e. g. Hitop.: वरं प्राण्यागो न च पिशुन-वाकेष्वभिष्टि: (ed. Schlegel-Lassen: पिशुनवादेष्वभिर्तिः); or Sihlana: भैने चाभिष्चिधेनेषु विरति: ग्रश्वत्समाधी र्ति: (i. e. finding pleasure in living upon alms &c.). ²Ambition, a strong desire; e. g. Hitop.: यश्कि चाभिष्-चिक्यमं श्रुती प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम. ³Splendour(?). E. 1. इच्, with श्रुभि, krit aff. इक् (Mádh. Dhátuvr. on क्च in reference to Páń. III. 3. 108. v. 8.); 2 श्रुभि and क्चि.

सभिक्चित Tatpur. m.f.n. (-त:-ता-तम्) ¹ Pleased, delighted. ²Delighting, finding pleasure in; e.g. Mahábh. Vanap.: जलक्री-डाभिक्चितं वाराहं रूपमसारत्. E. क्च् with श्राभि, kritaff. त्र.

श्रमिक्चिर Tatpur. m. f. n. (-र:-रा-रम्) Very pleasing, very bright, very beautiful. E. श्रम and र्चिर.

श्वभिष्त Tatpur. 1. m.f.n. (-त:-ता-तम्) ¹ Sounding, uttering; e.g. Aswam. Mahábh.: संग्रयाभिष्तं मूढं ग्ररीरमिति धारणा (Nilak.: = संग्रयोद्दोषकं विनाग्रवीजमित्यर्थः; a v.l. in this passage is संसर्गाभिरतं मूढं &c.). ² Sounded, sounding with; e.g. Vanap. Mahábh.: ग्रयश्चत् ... नदीः सार्साभिष्ताः; or पश्चन् ... वनानि ... वहिंणाभिष्तानि

2. n. (-तम्) Any cry, noise, sound; e. g. Rámáy: कोकिलाभिर्तेन च प्रगीतमिव तद्दनम्. E. रू with श्रामि, krit aff. त्त.
श्रमिरूप Bahuvr. or Tatpur. 1. m. f. n. (-प:-पा-पम्) ¹Pleasing, agreeable, beautiful; (Mathuresa, Bhánudíkshita &c.:
श्रमि लच्चं रूपमस्थ; Vardhamána: श्रोमनं रूपमस्थ। रूपममिगत इति वा); e. g. Nal.: श्रमिरूपं महात्मानं पर्व्यूहविनाश्चम्। यमन्वेषसि राजानं नलं पद्मिनेच्याम; or Patanj. on
a Vártt. to Páń.: च्या श्रमिरूपः '(a man like) a beautiful strawpuppet' (Kaiyyata: तृष्मयः पुरुषयञ्चा तत्सदृशो मनुष्यस्या।
संज्ञायामिति विहितस्य कनो लुप्। मनुष्य इति लुप्). ² Resembling, conform; e. g. Śatap: ऐन्द्र्यो ऽभिरूपा द्वाद्य मविन्त &c. ³ Learned, wise; e. g. Mahábh. Śāntip: श्रमिरूपः कुले जातिर्देचिभैत्तिबंङश्रतेः। सर्वा बुद्धीः परीचेयास्तापसाश्रमिणामपि (Arjunam: श्रमिरूपः पण्डितः). [For the abstract noun comp. श्रामिरूपक and श्रामिरूपः]

2. m. (-प:) A name or epithet of: a. Káma, b. Vishňu, 'Siva. The moon. [Śabdaratnáv.: ग्रामिक्पो बुधे एखे कामे-दुहर्विष्णुषु; but amongst the thousand names of Vishňu in the Mahábhárata this name does not occur, nor amongst the same amount of names of Siva in the Padmapuráńa.] E. ग्रामि and इप.

स्रभिक्पपित Bahuvr. m. (-ति:) The name of a fast observed in order to obtain a desirable master in a future world or birth; Mrichchhak.: नटी। अच्च उबवासी गहिदो (i. e. स्रार्थ उपवासो गृहीतः) ॥ सूचधारः। किसामधेस्रो असं उबवासो (i. e. किंनामधेसो ऽयमुपवासः) ॥ नटी। ऋहिक्बवदी साम (i. e. ऋभिक्पपितिनाम) ॥ सूचधारः। अच्चे इहलोद्स्रो आदु पार्लोद्स्रो (i. e. स्रार्थे ऐहलीकिको ऽथवा पार्लोकिकः) ॥ नटी। अच्च पार्लोद्स्रो (i. e. स्रार्थे एहलीकिको ऽथवा पार्लोकिकः) ॥ नटी। अच्च पार्लोद्स्रो (i. e. स्रार्थ पार्लोकिकः) &c. ह. स्रभिक्ष्प and पति, scil. उपवास.

श्रीभरोब्द Tatpur. m. f. n. (-द:-दा-दम्) (ved.) (Probably.) Causing violent weeping; Atharvav.: इदं खनामि भेषजं साम्प्रसमिरोब्दम्. E. ब्द्, in the caus. of the intens. with यङ्जुक्, with श्रीभ, krit aff. श्रुच्.

म्राभिलकपित्य Karmadh. (?) A large species of the hog-plum (Spondias mangifera); (Mahr. योर म्रांबाडा). E. म्राभिल (?) and कपित्य.

स्रभिलचित Tatpur. m. f. n. (-त:-ता-तम्) Marked, bearing signs or symbols; e. g. Yájnav.: अप्रमत्तस्रे द्वेषं सायाहे । निभलचित: (Mit.: अनभिलचित:। न्योतिर्विज्ञानोपदेशादि-ना अचिहित:). E. लच् with अभि, křit aff. क्त.

श्रभिलच्य I. Tatpur. m. f. n. (-च्य:-च्या-च्यम्) Notable, remarkable. E. लच्च with श्रभि, kritya aff. यत्.

II. Avyayibh. (-द्यम्) Towards the aim. E. श्राभ and बद्धा. श्राभ बहुन Tatpur. n. (-नम्) Jumping over; Medhatithi on Manu (श्रधसाद्गोपदध्याद्य न चैनमभिजङ्घयेत्, scil. श्राप्तम्): श्राभ बहुनमृत्सुत्य गमनम्. E. जङ्घ with श्राभ, krit aff. खुट्टः

ग्रिभिलावण Tatpur. 1. n. (-णम्) Wishing, desiring. E. लाष् with ग्रिभि, krit aff. ल्युट.

2. m. f. n. (-ण:-णा-णाम) Covetous (?) (according to Hemach.'s Dhátupar. s. v. लघ: भूषाक्रीधार्थेत्वे अभिलषणः, the quoted Sútra corresponding with Páń. III. 2. 151.; but it does not appear how the radical लघ with अभि belongs to the category भूषार्थ or क्रीधार्थ). E. लघ with अभि, krit aff. युच.

ग्रिमलषणीय Tatpur. m. f. n. (-य:-या-यम्) Desirable (Ja-yam.: प्रियाणि = ग्रिमलषणीयानि). E. लष् with ग्रिम, kritya aff. ग्रनीयर्.

ग्रिमिलियत Tatpur. 1. m.f.n. (-त:-ता-तम्) Desired, wished; e. g. Mahábh. Adip.: यत्ते ऽभिलियतं प्राप्तुं फलं तसान्नृपोत्त-मात्। ग्रहमेव प्रदास्त्रामि &c.; or the modern Pandits on Páń. (ग्रयशाभिमेताख्याने) = ग्रयशाभिलियताशाख्याने

2. n. (-तम्) Desire, wish; e. g. Hitop.: एतावता भव-तामभिलिषतं संपन्नम; or comm. on the Nalod.: नलश्च द्म-यनीमनोम्भिलिषतं समपूरयत् E. लष् with ऋभि, krit aff. क्त-